आलोचनात्मक सोच की कहानियाँ

जंगल एक, ज़िन्दगियाँ अनेक

शुरू करने से पहले

हम सभी जंगलों से अलग-अलग तरह से जुड़े हैं। हममें से कुछ लोगों के लिए जंगल बाघों के घर और वन्यजीवों के संरक्षण की जगह है। अन्य के लिए जंगल चूल्हे के लिए लकड़ी, बकरियों के लिए घास और ज़मीन के बारे में ज्ञान से होने वाली कमाई का ज़रिया हैं। हममें से कई लोग केवल उन वन्यजीवों को देखने के लिए जंगल जाना चाहेंगे जिनके बारे में हम सिर्फ़ पढ़ ही पाते हैं। हो सकता है हममें से कुछ लोग उन लोगों से पहले से वाक़िफ़ हों जिनका जीवन और काम जंगल पर निर्भर है।

यहाँ भारत के एक जंगल से जुड़े अलग-अलग लोगों की कहानियाँ दी गई हैं। हर कहानी पढ़ते समय कल्पना करें कि आप उस व्यक्ति के साथ जंगल के अन्दर जा रहे हैं – कभी पक्की सड़क पर, कभी पगडण्डियों पर जहाँ बकरियाँ चलती हैं, और कभी ऊँची, सूखी घास के बीच। और पूरे समय आस-पास बाघ के होने के संकेतों के लिए मुस्तैद रहते हुए। पढ़ते समय, इन बातों पर सोचें :

- हर व्यक्ति जंगल पर कैसे निर्भर है?
- यह जंगल किस तरह बदल रहा है?
- इन बदलावों से किसे मदद मिलती है/फ़ायदा होता है?
- इनकी वजह से किसे मुश्किलों का सामना करना पड़ता है?

हर कहानी के बाद उससे जुड़े सवाल दिए गए हैं। लेकिन सभी कहानियाँ आपस में जुड़ी हुई हैं – ठीक वैसे ही जैसे उनमें शामिल लोगों की ज़िन्दगियाँ। इसलिए सवालों के बारे में सोचने से पहले सभी कहानियाँ पढ़ें। अपने दोस्तों और शिक्षक के साथ इन पर चर्चा करें। याद रखें : इनमें से कई सवाल ऐसे हैं जिनका कोई एक 'सही' जवाब नहीं हो सकता है।

जंगल उत्पाद बटोरने वाली

गर्मियों में, सुकमती सूरज उगने से पहले उठती है और दूसरी महिलाओं के साथ पास के जंगल में जाती है। यह महुआ के पेड़ों पर फूल आने का मौसम है। महिलाएँ रात में गिरने वाले फूलों को इकट्ठा करने के लिए पेड़ों के नीचे कपड़ा बिछा देती हैं। इकट्ठा किए गए फूलों को सुखाकर हाट (स्थानीय साप्ताहिक बाज़ार) में बेचा जाता है। सुकमती उन्हें जंगल से इकट्ठा किए गए बाँस से बनी टोकरी में भरकर ले जाती है। अपनी आय से वह नमक और खाना पकाने का तेल ख़रीदती है। हर हफ़्ते सुकमती सूखी गिरी हुई टहनियाँ बीनने भी जंगल में जाती है, जिन्हें चूल्हे में जलाकर वह खाना पकाती है। हर मानसून से पहले वह अपने मिट्टी के घर की छत को फिर से ढँकने के लिए सूखी घास भी जंगल से इकट्ठा करती है। जब खाने की कमी होती है तो वह जंगली कन्द खोदकर लाती है या फल लाती है, खाने लायक पत्ते और मशरूम इकट्ठा करती है। सुकमती जानती है कि किस मौसम में उसे जंगल में कहाँ क्या मिल सकता है।

हाल के वर्षों में, जंगल के बड़े हिस्सों को बाड़ लगाकर घेर दिया गया है। वनरक्षक अब गाँव वालों को कई इलाक़ों में जाने की इजाज़त नहीं देते हैं। अत: अब सुकमती को अपने परिवार की ज़रूरतों का सामान इकट्ठा करने के लिए ज़्यादा दूर जाना पड़ता है, और अधिक समय लगाना पड़ता है। कुछ साल ऐसे भी होते हैं जब सुकमती को (घास के दोबारा उगने से पहले) गर्मियों की आग से जलकर काले पड़ गए जंगल के रास्तों से गुज़रना पड़ता है। जंगल से गुज़रते समय वह बाघों के आस-पास होने के संकेतों पर नज़र रखती है।

- सुकमती खाना पकाने के ईंधन, भोजन, छत के लिए घास और आय के लिए जंगल पर निर्भर है। जंगल की रक्षा करना उसके लिए नूर जैसे व्यक्ति, जो वहाँ कुछ समय के लिए ही आती है, से अलग क्यों है?
- शहरों में इस्तेमाल होने वाले कई तरह के उत्पाद, जिसमें लकड़ी, काग़ज़ और औषधियों जैसी चीज़ें शामिल हैं, जंगल से आते हैं। सुकमती ईंधन के लिए सिर्फ़ गिरी हुई टहनियाँ इकट्ठी करती है। यह पूछना क्यों ज़रूरी है कि क्या इन दो प्रकार के मानवीय उपयोगों के स्तर का जंगलों पर एक जैसा असर पड़ता है?
- सुकमती को पता है कि हर मौसम में अलग-अलग पौधे, फूल, मशरूम और कन्द-मूल कहाँ मिलेंगे। शंकर इस जंगल से बहुत अच्छी तरह से वाक़िफ़ है इसलिए उसे वनरक्षक के तौर पर काम पर रखा गया है। इस तरह की स्थानीय जानकारी लोगों और जंगल, दोनों के लिए क्यों महत्त्वपूर्ण हो सकती है?

एक बकरियाँ पालने वाला

लालसू का दिन अपनी बकरियों को जंगल के आस-पास चराने के लिए ले जाने से शुरू होता है। वह हरी-भरी जगहों और तालाब या डबरों जैसे जलस्रोतों की तलाश करता है। सूखे के महीनों में, जब गाँव के आस-पास चराई के लिए घास कम होती है तो यही वे जगहें होती हैं जहाँ उसकी बकरियों को चारा मिल सकता है। ये न हों तो परिवार को महँगा चारा ख़रीदना पड़ता है। उसे सावधान रहना पड़ता है क्योंकि बाघ जैसे जंगली जानवर भी उन्हीं जलस्रोतों पर पानी पीने आते हैं। आजकल उसे पहले के मुक़ाबले हिरण कम दिखाई देते हैं। वन अधिकारियों का कहना है कि बकरियाँ नन्हें पौधों को खाकर जंगल को नुक़सान पहुँचाती हैं। लेकिन लालसू का परिवार पीढ़ियों से यहाँ जानवर चराता आ रहा है, और जानता है कि अलग-अलग मौसम में किन इलाक़ों में जाने से बचना चाहिए। बकरियाँ जंगल के किनारे-किनारे घूमती हैं तो उनके मल के रूप में गिरने वाली मेंगनियाँ खाद का काम करती हैं। इससे नए पौधों को बढ़ने में मदद मिलती है।

कुछ पुराने रास्ते अब बाड़ के भीतर वाले जंगल से होकर गुज़रते हैं, जबकि कुछ अन्य जगहों पर तारकोल वाली सड़कें बनी हैं। लालसू शाम के समय जंगल के कुछ ख़ास हिस्सों में जाने से बचता है, विशेष रूप से वहाँ, जहाँ बाघों की आवा-जाही बढ़ गई है। एक हफ़्ते पहले एक अन्य चरवाहे की बकरी को बाघ ने मार डाला था। परिवार के लिए एक जानवर को खोना भी बहुत बड़ा नुक़सान होता है। पिछले साल साँप के काटने पर पिता के इलाज के लिए उसने दो बकरियाँ बेची थीं। चावल, तेल और स्कूल की कॉपियाँ ख़रीदने या मुश्किल महीनों में कर्ज़ चुकाने के लिए भी बकरियाँ बेची जाती हैं।

- वन अधिकारियों का कहना है कि बकरियाँ छोटे पौधों को नुक़सान पहुँचाती हैं। लेकिन लालसू का कहना है कि बकरियों की मेंगनियाँ पौधों को बढ़ने में मदद करती हैं। क्या दोनों बातें सही हो सकती हैं? चराई का प्रबन्धन कैसे किया जाए, यह तय करने से पहले हमें और क्या जानना ज़रूरी है?
- लालसू को पहले की तुलना में कम हिरण दिखाई देते हैं, जबकि गाँवों के पास बाघों की आवा-जाही बढ़ गई है। इससे जंगल के भीतर हो रहे बदलावों के बारे में क्या पता चलता है?
- जंगलों से दूर रहने वाले बहुत-से लोग रोज़ाना दूध, चमड़ा, माँस, सड़क और बिजली का इस्तेमाल करते हैं। क़स्बों और शहरों में रहने वाले लोगों की इन माँगों का लालसू जैसे परिवारों पर क्या असर पड़ सकता है?

एक वनरक्षक

शंकर का दिन अकसर सूरज उगने से पहले ही शुरू हो जाता है। हाथ में लाठी, पानी की बोतल और कपड़े का एक छोटा-सा झोला लेकर वह जंगल में गश्त करता है। वह रोज़ाना लगभग 25 किमी की लम्बी दूरी तय करता है, और जंगल में आग, शिकारियों के जाल, घायल जंगली जानवरों या भटके हुए मवेशियों को ढूँढ़ता है। कुछ गाँव वाले उससे नाराज़ हैं क्योंकि वह उन्हें संरक्षित इलाक़ों में जानवर चराने या लकड़ी काटने से रोकता है। शंकर कभी-कभी रेलवे लाइन और उन सड़कों के पास भी गश्त करता है जो जंगल के बीच से गुज़रती हैं। रात में, इन रास्तों को पार करने वाले जानवर कभी-कभी तेज़ रफ़्तार वाहनों और रेलगाड़ियों की चपेट में आकर घायल हो जाते हैं या मारे जाते हैं। हाल के वर्षों में, शंकर को संरक्षित क्षेत्र की सीमा के बाहर के गाँवों और खेतों के पास बाघों की गतिविधियों पर ज़्यादा नज़र रखने के लिए कहा जाने लगा है।

शंकर को इस काम के लिए इसलिए चुना गया था क्योंकि वह पास के ही एक गाँव का रहने वाला है, और इस इलाक़े को अच्छी तरह जानता है। लेकिन उसकी नौकरी पक्की नहीं है। वह महीने में लगभग छह हज़ार रुपए कमाता है, लेकिन उसकी तनख़्वाह दो महीने से रुकी हुई है। कभी-कभी वह जंगल के बीचों-बीच लकड़ी से बने एक साधारण कमरे में कई दिन बिताता है। यह कमरा अवैध शिकार को रोकने के लिए बनाया गया है। वहाँ रोशनी के लिए धीमा जलने वाला एक सोलर लैम्प भर होता है। हर रात सोने से पहले, वह ज़मीन और चटाई को अच्छे से देखता और फटकारता है कि वहाँ बिच्छू या साँप तो नहीं आ गए हैं। ये जन्तु गर्मी से बचने के लिए लकड़ी की दरारों से अन्दर आ सकते हैं। गश्त करना जोख़िम भरा हो सकता है। पिछले साल, पास के ही एक इलाक़े में एक वनरक्षक जंगली जानवर के हमले में घायल हो गया था। फिर भी शंकर रोज़ाना अपना काम करता रहता है क्योंकि उसका परिवार उसकी आय पर निर्भर है।

- शंकर ख़ुद गाँव से है, फिर भी उसके पड़ोसी उससे नाराज़ रहते हैं। आपको क्या लगता है कि अपनी नौकरी और अपने समुदाय के बीच फँसे होने पर शंकर को कैसा महसूस होता होगा?
- शंकर गाँव वालों को जंगल में जानवर चराने से रोकता है। लेकिन वह सड़कों और रेलवे लाइन के पास भी गश्त करता है जहाँ अकसर वाहनों और रेलगाड़ियों से जानवर मारे जाते हैं। इनमें से कौन-सी चीज़ आपको ज़्यादा ख़तरनाक लगती है? किन बातों से तय होता है कि जंगल में कौन-सी गतिविधियाँ प्रतिबन्धित हैं, और कौन-सी करने की इज़ाज़त है?
- शंकर का काम जंगल की 'सुरक्षा' करना है। फिर भी उसकी नौकरी पक्की नहीं है, और उसकी तनख़्वाह अकसर देर से मिलती है। इससे हमें जंगल के रक्षक की अहमियत के बारे में क्या पता चलता है?
- शंकर को अब संरक्षित क्षेत्र की सीमा के बाहर बाघों की गतिविधियों पर पहले से ज़्यादा नज़र रखने के लिए कहा जाता है। इससे आपको जंगल की सेहत के बारे में क्या पता चलता है?

एक स्टूडेंट विज़िटर

नूर ने अपनी विज्ञान की पाठ्यपुस्तक में प्रोजेक्ट टाइगर के बारे में पढ़ा था, इसलिए जब उसके स्कूल ने पास के टाइगर रिज़र्व में जाने का ऐलान किया तो वह बहुत उत्साहित थी। लेकिन जंगल उतना शान्त नहीं था जितना उसने सोचा था। सफ़ारी रूट पर जीपें चल रही थीं। इनमें बड़े कैमरों और दूरबीन के साथ पर्यटक बैठे थे। नूर ने सड़क के किनारे प्लास्टिक की बोतलें और स्नैक्स के रैपर देखे। शुरू में, वह बार-बार पूछती रही, "क्या हमें बाघ दिखेगा?" गाइड ने ज़मीन पर बाघ के पैरों के निशान दिखाए, और बताया कि कोई बाघ कुछ समय पहले वहाँ से गुज़रा था।

जैसे-जैसे वे जंगल में आगे बढ़े, नूर ने पेड़ों के बीच से गुज़रती एक सड़क और ऊपर से जाती बिजली की लाइनें देखीं। कुछ जगहों पर बाड़ लगी थी, और कुछ जगहों पर उसे खुली ज़मीन दिखी जहाँ से पेड़ काट दिए गए थे। उसके शिक्षक ने बताया था कि बाघ शान्त और अकेले रहने वाले जानवर होते हैं। उन्हें घूमने, शिकार करने और साथी खोजने के लिए बड़े और आपस में जुड़े जंगलों की ज़रूरत होती है। जंगल में बीच-बीच में कटाव को देखकर नूर सोचने लगी कि ये जानवर इन जगहों और बाधाओं को कैसे पार कर पाते होंगे। विज़िट के आख़िर तक नूर को बाघ तो नहीं दिखा, लेकिन उसने यह ग़ौर करना शुरू कर दिया था कि जंगल का इस्तेमाल कैसे होता है और उसमें बदलाव कैसे अलग-अलग तरीक़ों से होता है।

- नूर ने पर्यटकों को जंगल में प्लास्टिक फेंकते और जीपों को शोर मचाते देखा। इनका बाघों पर क्या असर पड़ सकता है? संरक्षित क्षेत्रों में पर्यटकों को जाने की इजाज़त क्यों होती है, जबकि सुकमती और लालसू जैसे लोगों को अकसर इन क्षेत्रों से बाहर रखा जाता है?
- पाठ्यपुस्तक कहती है कि बाघों को 'आपस में जुड़े जंगलों' की ज़रूरत होती है, लेकिन नूर ने देखा है कि सड़कें और बिजली की लाइनें जंगल को बाँट रही हैं। ऐसी बुनियादी ढाँचागत परियोजनाओं को बाघों के प्राकृतवास को टुकड़ों में बाँटने की इजाज़त क्यों दी जाती है?
- शंकर हर दिन जंगलों की रक्षा करता है, लेकिन उसे टाइगर रिज़र्व में आने वाले पर्यटन या तवज्जो का फ़ायदा नहीं मिलता। वन्यजीव संरक्षण से सबसे ज़्यादा फ़ायदा किसे होता है, और सबसे ज़्यादा बोझ कौन उठाता है?
- नूर सोचती है कि जो बाड़ें उसने देखी हैं उन्हें जानवर कैसे पार करते हैं। ये भौतिक रुकावटें साथी की तलाश कर रहे बाघ, महुआ के फूल ढूँढ़ रही सुकमती और चरागाह तक जाने की कोशिश कर रहे लालसू पर कैसा असर डालती हैं?

पढ़ने के बाद

सोचें : इन कहानियों में चारों लोगों का जंगल के साथ अलग-अलग रिश्ता है। आप सबसे ज़्यादा किससे जुड़ाव महसूस करते हैं, और क्यों? उस व्यक्ति के बारे में आपकी भावनाओं ने हर कहानी के आख़िर में दिए सवालों के आपके जवाबों को कैसे प्रभावित किया?

चर्चा करें : संरक्षण नीति, सड़कों, पर्यटन, ऊर्जा परियोजनाओं और जलवायु के दबाव की वजह से जैसे-जैसे जंगल बदलते हैं, वैसे-वैसे वन्यजीव और मनुष्य, दोनों ही अलग-अलग तरीक़ों से प्रभावित होते हैं।

(क) 'सुरक्षा' का मतलब : अगर किसी जंगल को महुआ के गिरे हुए फूल बीनने वाली महिला से तो 'सुरक्षित' रखा जाता है, लेकिन तारकोल सड़क या बिजली की लाइन से नहीं, तो असल में किसकी सुरक्षा हो रही है?

(ख) साझा जोख़िम : कोई बाघ लालसू के पड़ोसी की बकरी को मार देता है, और साँप उसके पिता को काट लेता है। ये कुछ ऐसे जोख़िम हैं जिनका सामना लालसू रोज़ करता है। क्या शहर में रहने वाला कोई व्यक्ति, जो 'बाघ को बचाना' चाहता है, इनमें से किसी जोख़िम का सामना करता है? क्यों या क्यों नहीं?

(ग) ज्ञान/जानकारी की भूमिका : आपको क्या लगता है कि बाघ की गतिविधियों को कौन बेहतर समझता है : एक वैज्ञानिक जो हर साल 2-3 महीने कैमरा ट्रैप और जीपीएस का इस्तेमाल करके उसका नक़्शा बनाता है, या लालसू, शंकर और सुकमती जैसे लोग जो रोज़ जंगल से गुज़रते हैं, और अपनी इन्द्रियों का इस्तेमाल करके जंगल में होने वाले छोटे-छोटे बदलावों को महसूस करते हैं? इन दोनों समूहों के ज्ञान/जानकारी में क्या फ़र्क़ हो सकता है? ऐसा क्यों है कि एक की बात को दूसरे से अधिक तवज्जो दी जाती है? क्या होगा अगर जंगल का कोई नया क़ानून सिर्फ़ एक समूह के ज्ञान/जानकारी पर आधारित हो?

(घ) ताक़त और न्यायसंगतता : अकसर जंगल से दूर रहने वाले लोगों के पास जंगल के लिए नियम बनाने की सबसे ज़्यादा ताक़त होती है, जबकि जंगल में या उसके आस-पास रहने वाले लोगों को सबसे ज़्यादा जोख़िम उठाने पड़ते हैं। हम जंगल को अपना घर मानने वाले लोगों और वन्यजीवों, दोनों के लिए संरक्षण को अधिक न्यायसंगत कैसे बना सकते हैं?

आपकी बारी : क्या आपने किसी ऐसे व्यक्ति को देखा है या उससे मुलाक़ात की है जो जंगल के उत्पाद इकट्ठा करता है, उसके पास जानवरों को चराता है, या जंगल की सुरक्षा का काम करता है? अपने इलाक़े के किसी व्यक्ति या अपने अनुभव के आधार पर एक पाँचवीं कहानी बनाएँ। आप यह कहानी कैसे लिखेंगे? आप दूसरे बच्चों को किन सवालों पर सोचने के लिए कहेंगे?

टिप्पणी : लेख के हिन्दी अनुवाद की समीक्षा के लिए हम हृदय कान्त दीवान के आभारी हैं।

i wonder...
Rediscovering school science

रचनाकार :

चित्रा रवि अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु में कार्यरत हैं। उनसे chitra.ravi@apu.edu.in पर सम्पर्क किया जा सकता है।

विद्या कमलेश इलस्ट्रेटर और डिज़ाइनर हैं और अलग-अलग मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों और पाठकों के लिए एडिटोरियल कंटेंट, ब्रांडिंग पहल और प्रकाशनों के लिए आकर्षक विज़ुअल कहानियाँ बनाने में माहिर हैं। उनसे vidya.kamlesh@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : प्रियेश गुप्ता **पुनरीक्षण :** उमा सुधीर **कॉपी-एडिटर :** अतुल अग्रवाल